Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

महर्षि दयानन्द से प्रभावित हिंदी पत्र-पत्रिकाए और पत्रकार का अध्ययन

Asha[1]* Dr. Govind Dwivedi[2]

[1]Research Scholar of OPJS University, Churu Rajasthan

[2]Associate Professor, OPJS University, Churu Rajasthan

----------X----------

प्रस्तावना:

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कई धार्मिक व सामाजिक पुस्तकें अपनी जीवन काल में लिखीं। प्रारम्भिक पुस्तकें संस्कृत में थीं, किन्तु समय के साथ उन्होंने कई पुस्तकों को हिन्दी में भी लिखा, क्योंकि आर्यभाषा की पहुँच संस्कृत से अधिक थी। हिन्दी को उन्होंने 'आर्यभाषा' का नाम दिया था। उत्तम लेखन के लिए आर्यभाषा का प्रयोग करने वाले स्वामी दयानन्द अग्रणी व प्रारम्भिक व्यक्ति थे।

महर्षि दयानन्द का क्रतिति उनके लेखन और चिंतन का ही प्रतिफल कहा जा सकता है। उन्होंने जो भी उपलब्ध प्राप्त की या समाज और राष्ट्र को जो भी प्रेरणा दे पाए मात्र अपने मौखिक और लिखित साहित्य के कारण। उनका लेखन, उनके प्रवचन, उनके पत्र, उनके शास्त्रार्थों का यदि विश्लेषण किया जाये तो उनका समग्र साहित्य ही उनके क्रतित का स्रोत है। महर्षि के क्रतिति को कुछ महत्वपूर्ण अंगों को निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है।

महर्षि दयानन्द के विचारों ने तत्कालीन साहित्यिक परिवेश को बहुत गहरे तक प्रभावित किया था। आधुनिक साहित्य में शायद ही ऐसा कोई हिन्दी साहित्यकार हो जिसकी सोच पर स्वामी दयानन्द के विचारों का प्रभाव ना रहा हो। उन्होंने साहित्य में बुहद्विाद का प्रतिपादन और सामन्तिादी मूल्यों का विरोध किया और यही दो स्वर उनके ठीक बाद वाले काल के हिन्दी साहित्य में मुखरित हुए हैं। महर्षि के योगदान को आचार्य क्षेमचंद्र सुमन कुछ इस तरह याद करते हैं, "...वास्ति में यदि हिन्दी साहित्य के सारे ही क्रियाकलाप पर द्रष्टि डालें तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुंर्ते हैं कि आधुनिक काल की सारी राष्ट्रीयता तथा सामाजिकता का मेरुदंड आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उनके द्वारा चलाये गये आन्दोलन हैं। आधुनिक काल के जितने भी प्रमुख साहित्यकार हुए हैं वे सब आर्यसमाज से प्रभावित विचारधारा के ही पोषक थे।"

महर्षि दयानन्द के हिन्दी वेद भाष्य का प्रभाव इतना गहरा हुआ कि जल्दी ही भारत के अनेक लेखकों के वैदिक साहित्य, व्याख्याओं और चिंतन से आज हिन्दी साहित्य भरा पड़ा है। आज प्रत्येक साधारण नागरिक वैदिक प्रमाणों से सुसि है। खड़ीबोली के हिन्दी के गद्य और काव्य साहित्य की मौलिक सोच को ही महर्षि ने प्रभावित किया जिसके कारण गद्य के विषय बदले और पद्य के स्वर श्रृंगार से राष्ट्रीयता और सामाजिक चेतना की ओर उन्मुख हुए। महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रदत्त अपने युग की सबसे क्रांतिकारी सहिहत्यक विधा खंडन-मण्डन को यद्यपि हिन्दी साहित्य का इतिहास विशेष रूप से स्वीकार नहीं करता है तथापि समय के पटल पर इसकी स्पष्ट छाप है और महर्षि का यह योगदान हिन्दी साहित्य में आज धर्मावलम्बियों द्वारा सजि अवलम्वित विधा है। महर्षि दयानन्द के साहित्य ने न केवल तत्कालीन साहित्य वरन साहित्यकारों की अगली पीकढ़यों की सोच को भी प्रभावित किया। महर्षि दयानन्द ने हिन्दी का स्वरूप जनमानस के अनुरूप बनाया और उसमे भाषा को रुचकर बनाने के सभी तत्व यथा हास्यविनोद, लोकोक्तियाँ, मुहावर देशज शब्दादि का भरपूर उपयोग किया था। उनकी हिन्दी सरल, सजि और जीवन्त थी। उनके समाजिक सरोकारों और राष्ट्रीय चिंतन से हिन्दी भाषा और हिन्दी पत्रकारिता दोनों ही अछूते नहीं रह सके। उनका प्रभाव रामधारी सिंह 'दिनकर' के शब्दों में, "रीतिकाल के ठीक बाद वाले काल में जो सबसे बड़ी घटना घटी ही था स्वामी दयानन्द का पवित्रतावादी प्रचार। इस पवित्रतावादी प्रचार से घबराकर द्वेदी युगीन कविगण नारी

www.ignited.in

के कामिनी रूप से आँखे चुराने लगे। इस युग के कवियों को श्रृंगार की कविता लिखते समय यह प्रतीत होता था कि जैसे स्वामी दयानन्द पास ही खड़े सब-कुछ देख रहे हैं।"

महर्षि दयानन्द ने अपने तेजस्वी प्रवचनों और लेखन से हिन्दी साहित्य को अभूतपूर्व शक्ति और सामर्थ्य दी। भारतेंदु जी की रचना 'अंधेर-नगरी' नाटक पर महर्षि का प्रभाव स्पष्ट दीखता है। जैसा की पूर्व में कहा जा चुका है कि विष्णु प्रभाकर जी भी मानते हैं कि भारतेन्दुजी के नाटक अंधेर नगरी महर्षि दयानन्द द्वारा अपने ग्रन्थ लिखित 'गर्व-गंड' राजा के द्रष्टान्त पर आधारित है। जिन महान साहित्यकारों के व्यक्तित्व और क्रतितः पर महर्षि के विचारों का प्रभाव पड़ा उनमे से कुछ प्रमुख नाम निम्नित हैं; और स्मरण रहे इन महानुभावों ने अपनी पीढ़ी का नेतृत्व किया है: आचार्य हजारी प्रसाद द्वेदी: हिन्दी के महान साहित्यकार और कवि श्री हजारी प्रसाद द्वेदी की कविताओं पर महर्षि का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है, स्वदेशी वस्तु को स्वीकार कीजै। विनय इतना हमारा मान लीजिये शपथ करके विदेशी वस्त्र त्यागो न जाओ पास इस से दूर भागो।

हिन्दी को एक सर्वमान्य नया नाम:

महर्षि का क्रतिति मात्र हिन्दी भाषा की प्रगति तक ही सीमित नहीं था अपितु उन्होंने हिन्दी भाषा के माध्यम से एक समग्र सामाजिक क्रांति का सूत्र पात किया था। भाषा, देश, धर्म और धर्म रक्षा, संस्कृति, शिक्षा, जीवन पद्धति, राजनीति, देश प्रेम, नारी उत्थान, सामाजिक कुरीतियों का विरोध आदि इन सभी तथ्यों पर देश और समाज को जागृत करने का कार्य महर्षि ने अपने आर्यभाषा लेखन के द्वारा सम्पादित किया और उसमे एक बड़ी सीमा तक सफल भी रहे । उस काल में जब हिन्दी के विरोधी उसे अपशब्दों से भूषित कर रहे थे। उसी समय स्वामी दयानन्द ने हिन्दी को आर्यभाषा अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्तियों की भाषा, आर्यदेश की भाषा कह कर गौरिाहन्वत किया। 'आर्यभाषा' शब्द से स्वामी दयानन्द ने यह स्पष्ट संकेत दिया कि हिन्दी एक तो आयों अर्थात् आर्यावर्त के हनिासियों की भाषा है; दूसरे उन्होंने इस देश का नाम 'आर्यावर्त' दोहराकर भारतीयों को अपनी हिस्मृत पहचान की भी याद कदलाई । 'आर्यभाषा' शब्द से एक बात तो निश्चित ही स्थापित हुई कि हिन्दी श्रेष्ठ, सभ्य देश के सभ्य नागरिकों की भाषा है और इसी आर्यभाषा में महर्षि दयानन्द ने जिस प्रकार अपना संदेश देश के कोने-कोने तक पहुँचाया ही एक शिष्ट इतिहास है। महर्षि दयानन्द ने अपनी दूर-द्रष्टि का परिचय देते हुए हिन्दी का नाम आर्यभाषा रखा। उनका विश्वाश था कि आर्यत्व और आर्यभाषा के नाम से अधिकांश हिन्दी भाषी राज्यों में भी इसका विरोध नहीं होगा और, क्योंकि दक्षिणभारत की अनेक भाषाएँ संस्कृतनिष्ठ हैं इसलिए कालान्तर में वहां के लोगों को भी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को समझने में अधिक समस्या नहीं होगी। इस विषय में देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय 'महर्षि दयानन्द चरित' की भूमिका में लिखते हैं इसी कारण से जैसे ही समस्त भारत में एक शास्त्र अर्थात् वेद शास्त्र को स्थापित करने के किये आजीवन संग्राम करते रहे, वैसे ही वेद प्रतिपाकदत एक अद्वितीय परमेश्वर की उपासना को प्रतिष्ठित करने के लिये मन, वचन, कर्म से चेष्टा करते रहे। उन्होंने जैसा प्रयास भारत के कुलगत, विषणगत, सम्प्रदायगत शाखा-प्रशाखा भेद को छिन्न-भिन्न करके आर्य जाति के संगठन के निमित्त भी किया था कि आर्यावर्त में आदि से अन्त तक एक भाषा प्रचलित हो जाये। वस्तुत: इसी उद्देश्य से उन्होंने हिन्दी भाषा को आर्यभाषा, अर्थात् समस्त आर्यावर्त में प्रचलित भाषा का नाम दिया था।[२२] जिस व्यक्ति ने इस से पहले अपने जीवन में मात्र संस्कृत में लेखन और वार्न किया हो उसके लिए एक अपरिहते भाषा हिंदी को अपनाकर उसे उत्कृष्ट साहित्य सृजन के उस स्तर ले जाना; इसमें कितनी करठनाई आई होगी इसका सजि अनुमान लगाया जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना पहला सार्वजनिक प्रवचन हिन्दी में काशी में मई,१८७४ ई. में दिया और एक विज्ञापन द्वारा इसकी पूर्व सार्वजनिक सूचना जारी की गयी थी।

हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में महर्षि दयानंद सरस्वती की कोई प्रत्यक्ष देन नहीं है, फिर भी हिन्दी के आज के स्वरूप और स्थान की बात करें तो इसे सशक्त और समर्थ बनाने में उनका योगदान अप्रतिम है। महर्षि दयानंद सरस्वती समाज सुधारक, चिन्तक और विचारक थे। कवि या कथाकार नहीं थे। उन्होंने साहित्यकारों की तरह कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, कविता आदि नहीं लिखे, स्वामी जी का समय रीतिकाल और आधुनिक काल के बीच का समय था। तब भारतेन्दु और द्विवेदी युग आरम्भ हुए थे। रीति कालीन घोर श्रृंगारिकता के प्रति तत्युगीन रचनाकारों की अनासक्ति और सुधारवादी, नैतिकतावादी, मूल्यवादी, आदर्शवादी कथ्य स्वामी जी के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, धार्मिक आंदोलनों का ही प्रभाव था।

भारतेंदु हरिश्चंद्र पर महर्षि का प्रभाव्:

भारतेंदु हरिश्चंद्र भी इसे मूर्धन्य पत्रकारों में से हैं जिन्होंने अनेक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन किया। आपके नाम पर भी हिन्दी पत्रकारिता के एक काल-खण्ड का नाम भारतेंदु युग रक्खा गया है। उन पर महर्षि दयानन्द के प्रभाव को निम्न द्रष्टांतों से किसी हद तक समझा जा सकता है, "हम.ग्रिकफथ तथा ईश्वरचंद्र विद्यासागर की तरह महर्षि दयानन्द भारतेंदु की पत्रिका 'कवि वचन सुधा' में लिखा करते थे। इस पत्र के लेखकों

ने हिन्दी को नवीन शैली तथा नई चाल दी।"[१९] डॉ. मीनाक्षी सिंह अपनी पुस्तक में लिखतीं हैं, "अनेक पत्र जो पहले मात्र साहित्य छापते थे अब उन्होंने राजनैतिक और सामाजिक कुरीतियों पर भी लिखना प्रारम्भ कर दिया था। हिन्दी साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता में समाजिक चिंतन, राष्ट्र-चिंतन, वैदिक-संचेतना और सामाजिक बुराइयों पर उससे पहले प्राय: नहीं लिखा गया। हिन्दी साहित्य के नाम पर पौराणिक और अन्य मतों की पुस्तकों का अनुवाद छपता था। बहुत से ऐसे विषय थे जिन्हें छूना किसी भी पत्रकार या लेखक के लिए हिम्मत की बात थी जैसे बाल-विवाह, स्त्री-अशिक्षा, जात-पांत का खंडन, वैज्ञानिक धार्मिक सिद्धान्त, स्वराज्य का खुला समर्थन आदि अनेक विषय थे जिन पर महर्षि दयानन्द ने १८६३ई. से ही आघात करना प्रारंभ कर दिया था और उसी से ताकत पाकर अनेक सम्पादकों ने इन विषयों पर लिखने का साहस किया।...उदाहरण के लिए कवि-वचन सुधा को लिया जा सकता है। उसमें पहले देवकवि का अष्टयाम, दीनदयाल गिरी का अनुरागबाग़, रासो, जायसी की पट्टावत, कबीर की साखी, बिहारी के दोहे, गिरधरदास का नहुष नाटक तथा गुलिश्तां का हिन्दी अनुवाद आदि जैसी साहित्यिक सामग्रियां छपती रहीं,पर शीघ्र ही उसमे राजनीति आदि पर गम्भीर टिप्पणिया प्रकाशित होने लगीं।

महर्षि दयानन्द का समाचार पत्रों पर प्रभाव :

महर्षि दयानन्द ने अपने समय के सभी पत्रों को प्रभावित किया। डॉ. सत्यकेतु लिखते हैं, "बंगदर्शन नामक पत्र महर्षि के कलकत्ता, बम्बई, पूना आदि में उनके कार्य को इस प्रकार व्यक्त करता है,"बम्बई और पूना में कितने ही लोग आर्यसमाज में प्रविष्टि हो गए हैं। बम्बई प्रदेश में भ्रमण करते हुए मैंने देखा कि वहां दयानन्द ने महान आन्दोलन उपस्थित कर रखा है...जहाँ स्थान- स्थान दयानन्द की ही चर्चा होती है।" महर्षि के कार्य और विद्वत्ता का कुछ ऐसा प्रभाव था कि कोई भी समाचार पत्र उनको अनदेखा नहीं कर पाया,अपने समय का प्रसिद्ध पत्र हितेच्छु लिखता है, "पूना के पत्र दयानन्द और पंडितों की सभाओं के विणषन से भरे हुए हैं। पंडित लोग दयानन्द की सभाओं के उत्तर में यह बात निर्धारित करने के लिए समता रखते हैं कि मूर्तिपूजा के इस महान शत्रु का किस प्रकार सम्मुख किया जाये ...इसकी संभावना प्रतीत नहीं होती कि पूना के शास्त्री स्वामीजी के साथ खुले मैदान में शास्त्र-युद्ध करने का साहस करेंगे और यह प्रतीत होता है कि ओछी चालें ही चलते रहेंगे जिससे उनके शास्त्रार्थ न करने का मनोरथ पूर्ण हो।"

कलकत्ता के इंडियन मिरि' पत्र ने स्वामीजी के प्रति लाहौर के ब्राह्मण वर्ग के आक्रोश को इस प्रकार सूहर्त किया था, "विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि नगर के पंडित और पुरोवित महिला गण को उकसा रहे हैं कि वे अपने सम्बन्धी पुरुषों को स्वामीजी के व्याख्यानों में जाने से रोकें। स्वाथी मनुष्य स्वामीजी के विरूद्ध सब प्रकार की अफवाहें फैला रहे हैं, परन्तु यह देख कर दुखी होते हैं कि पंडित दयानन्द श्रोताओं के मनों को वैदिक सच्चाइयों के ग्रहण करने के लिए तर्ययार कर रहे हैं।" भारत में हिन्दी का पहला समाचारपत्र निकलने तक महर्षि दयानन्द की ख्याति और प्रभाव भारतीय जनमानस पर जम चुका था। संभवत: इसीलिये हिन्दी के पहले समाचार पत्र 'उदन्त मार्तंड' में भी न केवल धर्म सम्बन्धी विविध सामग्री प्रकाशित होती थी अपितु 'संसार पर वैदिक धर्म का प्रभाव' जैसे लेख प्राय: प्रकाशित होते रहते थे।

संस्कृत के पाश्चात्य तथा भारतीय दोनों के विद्वानों ने महर्षि के वेदभाष्य की उत्कृष्टता व प्रमाणिकता को स्वीकार नहीं किया किया। स्वामीजी के वेदभाष्य को देखकर इन लोगों में जो प्रतिक्रिया हुई, इंडियन मिरि' कलकत्ता के एक लेख से उसका अनुमान किया जा सकता है, "पंडित दयानन्द सरस्वती को विकदत हो कि उन्होंने वेदों के अपने विलक्षण तथा उत्तम भाष्य से भिड़ों के एक बहुत बड़े छते को छेड़ दिया है। स्वामीजी की वेदभाष्य पत्रिका पर प्रो. टोनी और ग्रिफ्फ्थ जैसे विद्वानों ने आक्षेप किये हैं जिसके प्रमाण स्वरुप दो प्रबल पक्षों के बीच शास्त्रार्थ छिड गया है।" स्वामीजी अपने व्याख्यानों में क्या कुछ कहते थे और जनता पर उनका क्या प्रभाव पड़ता था, इसे स्पष्ट करने के लिए 'अखबारे-आम' नामक पत्र के २ मई, १८७७ई. के अंक के एक लेख के कुछ अंश उर्दधृत करना उपयोगी होगा, "एक सप्ताह हुआ कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी लाहौर में विराजमान हैं। आप साधुओं के वेश में रहते हैं और नगर-नगर में यह उपदेश करते फिरते हैं कि चारों वेद ईश्वरीय पुस्तकें हैं और संसार का सब ज्ञान इन पुस्तकों में विद्यमान है। कोई बात एसी नहीं जो इन पुस्तकों से बाहर हो। भारत के प्राचीन निवासी प्रत्येक विद्या और कला में निपुण थे। रेल चलाना वे जानते थे, तार द्वारा समाचार पहुँचाते थे, अमरीका का उन्हें ज्ञान था। वैधक विद्या, राजनीति, तचकविद्या, उनके यहाँ पूर्ण थी, परन्तु उनकी बहुत सी पुस्तकों का नाश हो गया और फूट ने उनकी ही दशा कर दी जो हम आज देखते हैं। वेद में मूर्तिपूजा का कहीं विणषन नहीं और न चाँद, सूरज, अग्नि, और वायु की पूजा की शिक्षा है। जो लोग ऐसा समझते हैं वे भारी भ्राहन्त में हैं। स्वामी जी वेद का भाष्य लिख रहे हैं, और उसके कई भाग छप भी चुके हैं

www.ignited.in

...स्वामीजी भारत के नि शिक्षितों से इस बात पर सहमत हैं कि जात-पात कोई वस्तु नहीं है।" महर्षि के जाने के बाद भी उनके अनुयायिओं ने हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों के लिए अनेक संघर्ष किये । धौलपुर का सत्याग्रह रहा हो, दक्षिण भारत में अछूतोद्धार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द नेतृत्व में किया गया वाईकोम (केरल राज्य) का अछोतों के अधिकार के लिए किया गया सत्याग्रह या मोपला के दंगा पीड़ितों कि सहायता, इन सब में आर्यसमाज की बड़ी भूमिका रही।

उपसंहार

महर्षि दयानन्द के विचारों ने तत्कालीन परिदृश्य को समग्रता में प्रभावित किया। सामाजिक, आर्थिक,राजनैतिक, आध्यात्मिकता, स्वराज, राष्ट्रीयता की की भावना, धर्म, गाय तथा अन्य उपयोगी पशुओं की रक्षा, सभी क्षेत्र उनकी सोच से प्रभावित हुए। विद्वान इस बात पर पूरी तरह सहमत हैं कि उनके प्रभाव ने तत्कालीन पत्रों की विषय सामग्री में आमूलचूल परितषन आया। धार्मिक चर्चाओं के अतिरिक्त सामाजिक और राजनैतिक चेतना के विषय तत्कालीन समाचार पत्रों के अग्र लेख कथाएँ बनने लगे और हिन्दी साहित्य श्रृंगार काव्य के बन्धनों को तोड़कर खड़ी बोली के परिष्कृत, सुसमृद्ध साहित्य में विकसित हुआ। इसके अतिरिक्त उनके अनुयायियों ने आर्यसमाज के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शतश: पत्रों की स्थापना की। महर्षि के विचारों ने साहित्यकारों की एक पूरी पीढ़ी को श्रंगार रस से निकल कर राष्ट्रीयता कि ओर उन्मुख किया जो आगे चल कर सदी साहित्य में एक परम्परा ही बन गयी। आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रथम पीढ़ी का शायद ही कोई साहित्यकार हो जिसके कार्य पर महर्षि का वैचरिक प्रभाव न पड़ा हो। आचार्य प्रेमचंद्र सुमन तो उस युग को भाषागत प्रतिमान की द्रष्टि से 'दयानन्द युग' कहते हैं। वे यह भी मानते हैं कि कि यदि आर्यसमाज के द्वारा वैचरिक क्षेत्र में ऐसे क्रांतिकारी परितषन न हुए होते तो हिन्दी साहित्य को सर्वश्री प्रेमर्ंद,सुदर्शन ,र्तुरसेन शास्त्री, यशपाल और राहुल सांस्कृत्यायन कैसे प्रखर और मेधावी कथाकार उपलब्ध न हुए होते।

प्रस्तुत प्रमाणों और महर्षि दयानन्द की परम्परा में पोषित आर्य पत्र-पत्रिकाओं से वृहद् विवरण और उनके द्वारा पत्रकारिता के सच्चे मानदंडों का पालन, राष्ट्रीयता के आन्दोलन में सक्रिय सहभागिता, स्वदेशी का प्रचार, धर्मरक्षा, शुद्ध-आन्दोलन, धर्म, संस्कृति, समाजसुधार, अछूतोद्धार, सांप्रदायिक एकता राजनीति, वैदिक प्रिर्न, आर्यभाषा का प्रचार और प्रसार, विज्ञान, स्त्री, युवा और बालोपयोगी सामग्री, किसानों की समस्याओं, बेरोजगारी, बालविवाह, विधि विवाह, बेमेल विवाह, शिक्षा, स्त्री शिक्षा, बहु-विवाह विरोध, गद्य साहित्य, पद्य साहित्य आदि विषयों पर उपयोगी व सुरुचकर,सामग्री के प्रकाशन से यह भली भांति स्थापित हो जाता है कि महर्षि दयानन्द की परम्परा में पोषित पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी पत्रकारिता के विकास में भरपूर योगदान दिया। इस अध्ययन का एक शिष्ट निष्कर्ष यह भी निकला कि आज पत्रकारिता के जितने भी सरोकार हैं उन सब का स्रोत महर्षि के विचारों और ग्रन्थों में उपस्थित है।

संधर्व ग्रन्थ सूची

हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कोशल पहब्लसशग हाउस, फैजाबाद, २०११

पौराहणक पोप पर वैदिक तोप, पं.मंशाराम शास्त्री, विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, दिल्ली, २००३

हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, मीनाक्षी सिंह, ओमेगा पहब्लकेशन, नई दिल्ली, २००९

सोजे वतन, प्रेमर्ंद, अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, गाहज़याबाद, २००९

स्वामी दयानन्द सरस्वती समसामहयक पत्रों में, विभानीलाल भारतीय, दयानन्द अध्ययन संस्थान, जोधपुर, २००३

स्वामी दयानन्द सरस्वती गोकरुणानिधि, विजय कुमार गोविन्द राम हासानंद, दिल्ली, २००५

श्रेयमागष का पथिक भीमसेन विद्यालंकार, शान्ता मल्होत्रा, के.के. पहब्लकेशन, दिल्ली, २००१

राष्ट्रीय निजागरण और सदी पत्रकारिता, मीरारानी बल, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, २०१२

महर्षि दयानन्द, इन्द्र विद्यावास्चति, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, २०१३

महर्षि दयानन्द र्रत, देवेन्द्र मुखोपाध्याय, विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, दिल्ली,२००१

भारत-भक्ति, पं. मूर्ति एम्. ए., सम्पा. राजेंद्र जिज्ञासु, स्वामी स्वतंत्रानन्द शोध संस्थान, अबोहर,२००२

भारत-भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, र्हरगॉव झाांॅसी, २०१५वि.

भाषा का इतिहास, भगिद्दत रिसर्ष स्कॉलर, विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, दिल्ली, २०१२

प्रेम-तरंग: ले. महाशय हर्रजीलाल जी 'प्रेम', सम्पा. राजेंद्र 'जिज्ञासु', श्री योगनिरोगधाम, अबोहर,२००१

आर्यसमाज, लाला लाजपत राय, अनु. विभानीलाल भारतीय, संस्कार प्रकाशन दिल्ली,२००६

क्रांहतीर पंडित नरेन्द्र, राजेंद्र जिज्ञासु, विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, दिल्ली, २००७

Corresponding Author

Asha*

Research Scholar of OPJS University, Churu Rajasthan